PROF. SUMITRA K. PATEL

DEPARTMENT OF HINDI

UMIYA ARTS & COMMERCE COLLEGE FOR GIRLS

SOLA, AHMEDABAD

SEM-6
PAPER-315

- अनुवाद के विभिन्न प्रकारों का परिचय

अनुवाद के प्रकारों का चार मुख्य आधार माने जाते है ।

- गद्द-पद्द का आधार
- साहित्यिक विधा का आधार
- विषय का आधार
- अनुवाद प्रकृति का आधार

गद्द-पद्द के आधार पर

1 गद्दानुवादः

यह अनुवाद गद्द में होता है या कियाजाता है ।

गद्द का ही गद्द में अनुवाद कियाजाता है ।

2 पद्दानुवादः

यह अनुवाद पद्द में होता है । पद्द का ही पद्द में अनुवाद किया जाता है । इसे छंदानुवाद भी कहते है ।

3 मुक्त छंदानुवादः

स्पष्ट है की यह अनुवाद मुक्त छंद में किया जाता है । मूल सामग्री या पाठ मुक्त छंद में होने पर ही यह अनुवाद किया जाता है ।

साहित्यिक विधा के आधार पर

1 काव्यानुवादः

काव्य रचना का अनुवाद काव्यानुवाद कहलाता है। काव्यानुवाद प्रायः गद्द, पद्द या मुक्त छंद में आवश्यकता अनुसार किया जाता है ।

2 नाटकानुवादः

नाटक का किसी दूसरी भाषा के नाटक में अनुवाद नाटकानुवाद होता है ।

3 कथानुवादः

किसी कथा-साहित्य अर्थात उपन्यास अथवा कहानी का अन्य कथा-साहित्य में जो अनुवाद किया जाता है उसे कथानुवाद कहा जाता है ।

विषय के आधार पर

विषय के आधार पर अनुवाद के सामान्यतः निम्न लिखित भेद माना जाते है ।

1. पत्रकारिता का अनुवाद
2. विधि साहित्य अनुवाद
3. वैज्ञानिक साहित्य अनुवाद
4. धार्मिक साहित्य अनुवाद
5. ललित साहित्य अनुवाद
6. कार्यालयीन अनुवाद
7. गणित साहित्य अनुवाद
8. एतिहासिक साहित्य अनुवाद
9. तकनीकी अनुवाद

अनुवाद-प्रकृति के आधार पर

1.मूलनिष्ठ अनुवाद 2. मूलमुक्त अनुवाद 3. शब्दानुवाद
4. भावानुवाद 5. छायानुवाद 6. सारानुवाद
7. व्याख्यानुवाद 8. आदर्श अनुवाद 9. रुपांतरण
10. वार्तानुवाद

इस प्रकार अनुवाद के अनेक भेद-प्रभेद है । सामान्यतया अनुवाद के जो महत्वपूर्ण प्रकार हमप्रचलित है, यहां उनके बारे में विस्तृत चर्चा करनाआवश्यक है । महत्वपूर्ण अनुवाद-प्रकार निम्नलिखित है ।

(अ) शब्दानुवाद

शब्दानुवाद में स्त्रोत भाषा के शब्दों तथा शब्दांशों को ज्यों-का-त्यों ळक्ष्य भाषा में रुपांतरित करके अनुवाद किया जाता है।

(आ) भावानुवाद

भावानुवाद में शब्दानुवाद की तरह केवल शब्द या वाक्य प्रयोग आदि पर ध्यान न देकर स्त्रोत भाषा तथा लक्ष भाषा के मूल अर्थ विचार और भाव पर अधिक ध्यान दिया जाता है ।

(इ) छायानुवाद

छायानुवाद में मूल पाठ की अर्थच्छछाया को ग्रहण कर अनुवाद किया जाता है ।

(ई) व्याख्यानुवाद

इस अनुवाद में मूल पाठ की व्याख्या या टीका के साथ अनुवाद किया जाता है ।

(उ) सारानुवाद

लंबी रचनाओं लम्बे भाषणों आदि को उसके मूल तत्वको सुरक्षित रखते हुए संक्षेप में रुपांतरित करने की प्रक्रिया को सारानुवाद कहते है ।

(ऊ) आदर्श अनुवाद

अनुवादक मूल पाठ की मूल सामग्री का अनुवाद अर्थ तथा अभिव्यक्ति सहित लक्ष भाषा में अनुवाद करता है ।

(ए) रुपांतरण

अनुवादक किसी प्रकार का रुप बदलकर उसे दूसरी विधा में परिवर्तित कर देता है।